फ्रेडरिक डगलस

गुलामी के आखिरी दिन

विलियम मिलर

फ्रेडरिक डगलस

गुलामी के आखिरी दिन

विलियम मिलर

फ्रेडरिक डगलस एक गुलाम पैदा हुए थे. उन्होंने अपने पिता को कभी नहीं जाना और उन्होंने अपनी माँ को केवल कुछ ही बार देखा. माँ पूरी रात ठंडे जमे हुए जंगल से होते हुए, चाँद के उजाले में खेतों को पार करते हुए उन्हें देखने आती थीं.

माँ पूरी रात इसलिए चलती थीं जिससे कि वो कुछ देर के लिए डगलस को अपनी गोदी में उठा सकें. फ्रेडरिक को अपनी माँ चेहरा जीवन भर याद रहा : काली त्वचा और गर्म आँखें, और मुंह पर हमेशा एक प्यारी मुस्कान.

फ्रेडरिक को उनकी दादी ने पाला. दादी ने फ्रेडरिक से कहा कि वो अपनी माँ को फिर से नहीं देख पाएगा, क्योंकि गुलामों के मालिक ने उसे कई मील दूर एक दूसरे मालिक को बेच दिया था.

फ्रेडरिक ने सब कुछ समझने की कोशिश की, लेकिन जब कभी भी वो अपनी मां के बारे में सोचता, तो उसकी आंखों से आंसू बहने लगते थे.

उसे जल्द ही पता चला कि बच्चों को भी खेतों में काम करना होता था. बच्चे, बड़ों के पीछे-पीछे चलते हुए मक्का के पौधों के बीच उगने वाले खरपतवारों को उखाड़ते थे.

केवल शनिवार को ही उसे कुछ घंटे खेलने की अनुमति दी गई थी. लेकिन फ्रेडरिक शर्मीला था और उसे दूसरे बच्चों के खेलने पसंद नहीं था. वो बस अपनी माँ के बारे में ही सोचता था - माँ को उसे छोड़कर आखिर क्यों जाना पड़ा? उसने सोचा कि वो आखिर गुलाम क्यों था, और उसका मालिक, मालिक क्यों था?

अपने चारों ओर फ्रेडरिक ने भयभीत लोगों को देखा.
वे मर्द और औरतें हमेशा अपने सिर नीचे झुकाकर चलते थे.

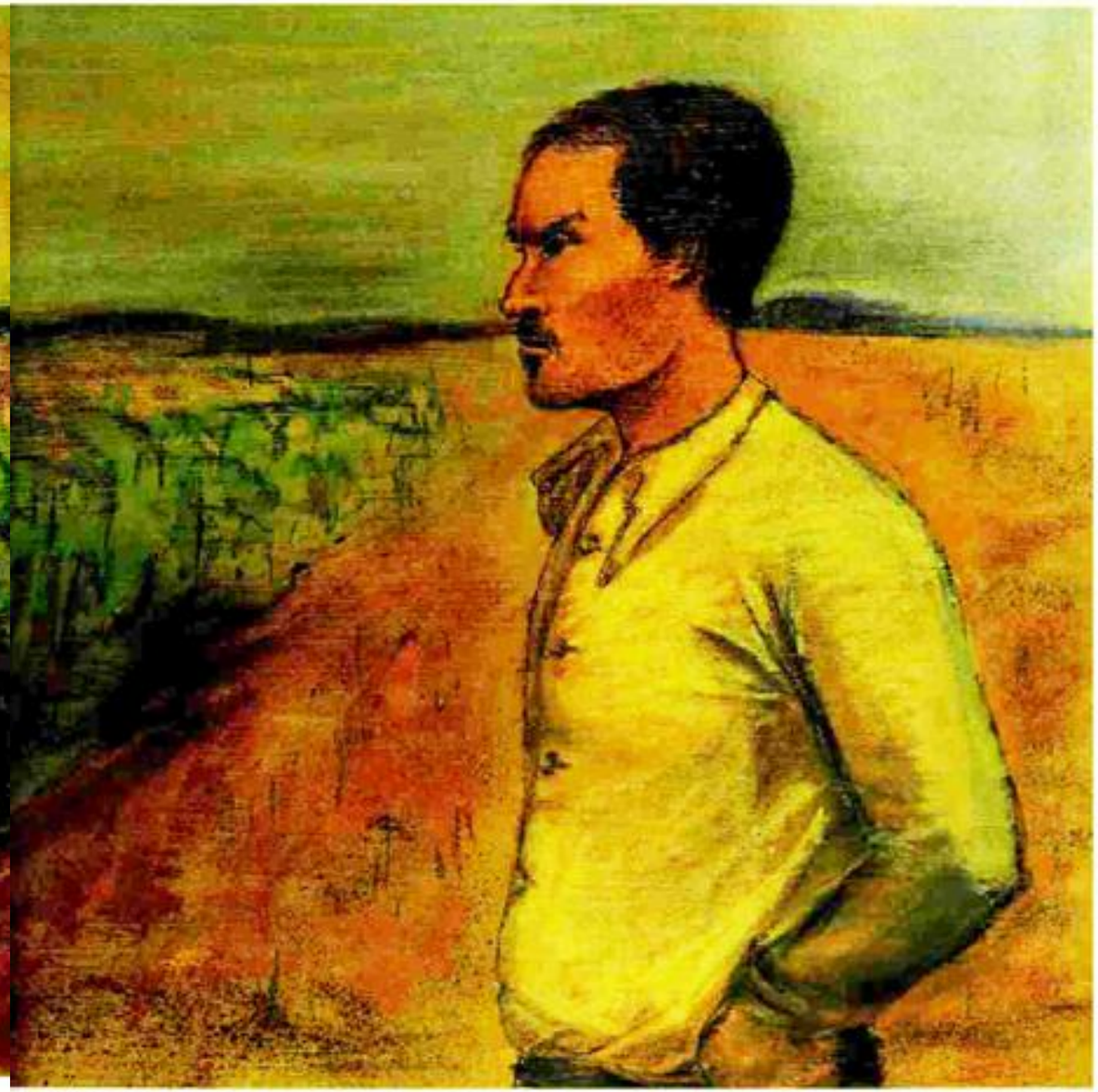

वो लोग कभी एक शब्द भी नहीं बोलते थे.
जब ओवरसियर पास होता तब वे फुसफुसाते तक नहीं थे.

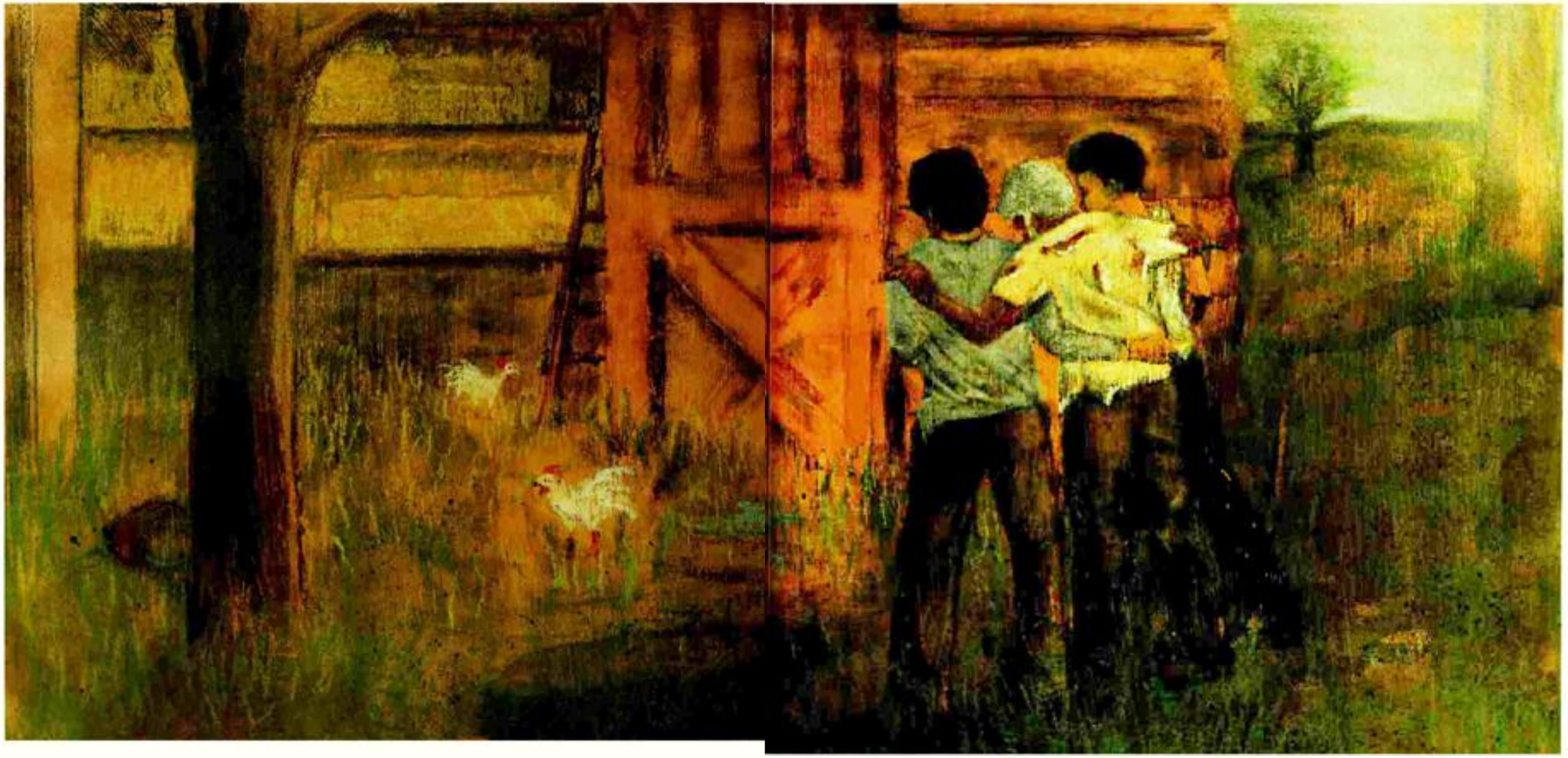

लेकिन उसके बावजूद ओवरसियर उन्हें पीटता था. एक बार, फ्रेडरिक ने ओवरसियर को अपने मालिक के पसंदीदा गुलाम को कोड़े मारते हुए देखा. बूढ़ा गुलाम कुछ ज़्यादा देर सो गया था.

और वो मालिक के घोड़े को तैयार करना भूल गया था. फ्रेडरिक ने कोड़े के उन प्रहारों को अपनी पीठ पर महसूस किया. उसे लगा जैसे उसके करीब के सभी गुलामों की पीठ पर कोड़े बरस रहे हों.

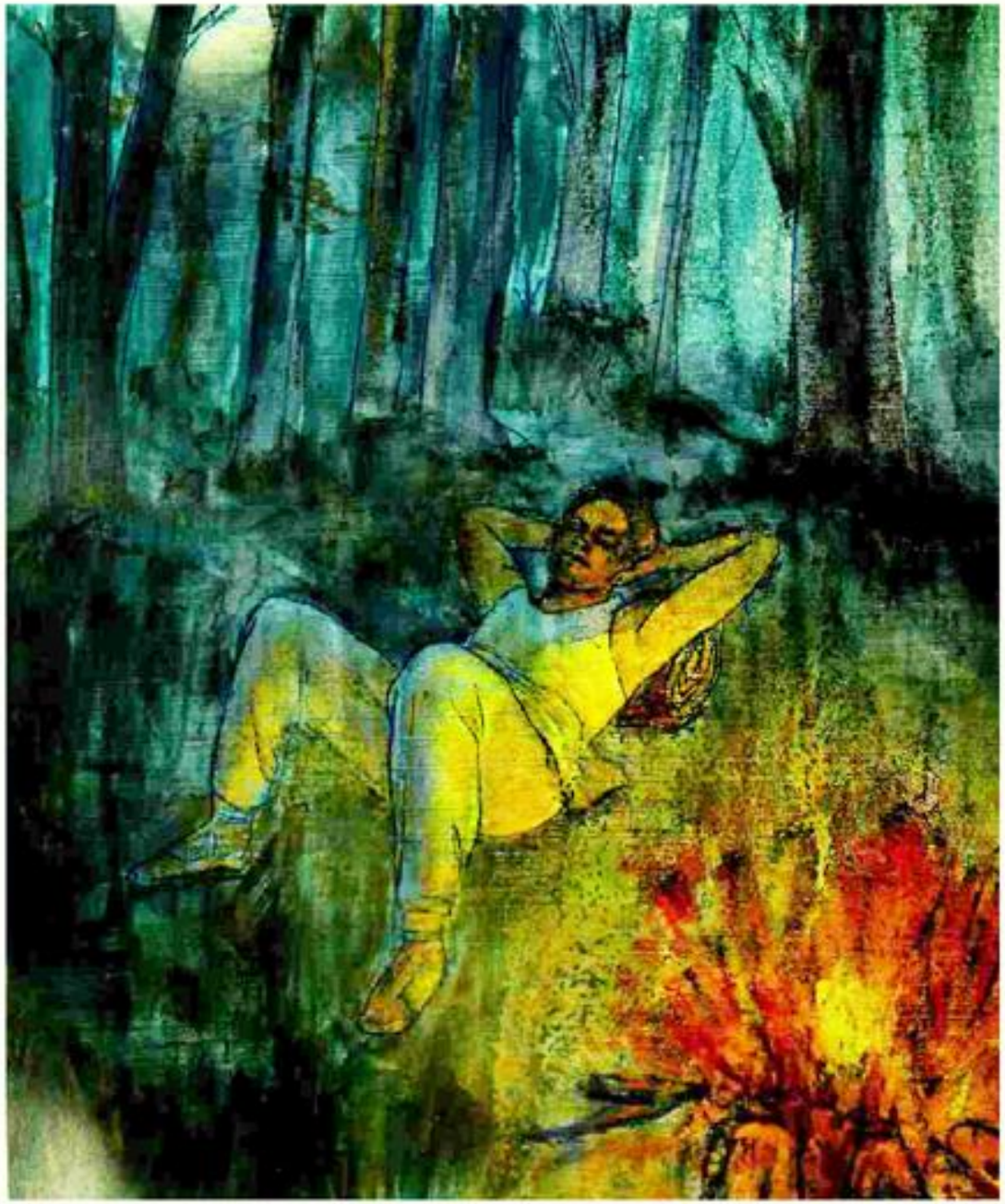

उस रात जब वो आग के पास लेटा तो फ्रेडरिक ने भागने की एक योजना बनाई. उसने उत्तर की ओर भाग जाने का सपना देखा जहाँ के शहरों में काले लोगों को, गोरों से कोई डर नहीं था. उसने एक नाव चुराने का सपना देखा, और नाव को चलाते हुए, न्यूयॉर्क पहुँचने का सपना देखा.

लेकिन तब फ्रेडरिक सपने देखने के अलावा और ज़्यादा कुछ कर भी नहीं सकता था.

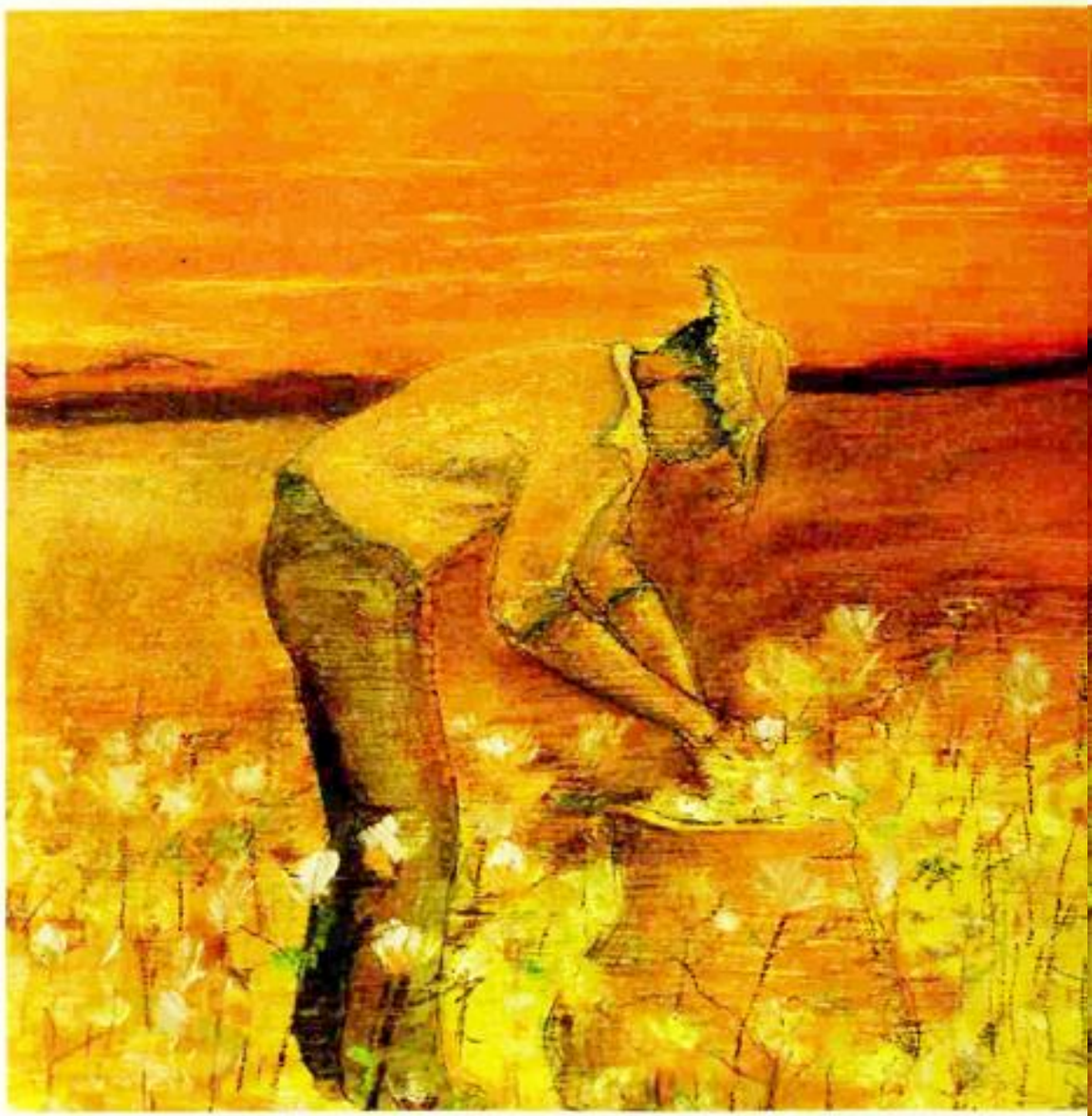

जैसे-जैसे वो बड़ा और अधिक शक्तिशाली हुआ वैसे-वैसे
मालिक उससे और ज़्यादा काम की अपेक्षा करने लगा. कभी-कभी,
पतझड़ में, फ्रेडरिक आधी रात तक खेतों में काम करता था.

और फिर भोर की पहली किरण के निकलते ही वो
वापस मक्का या कपास के खेत में काम कर रहा होता था.

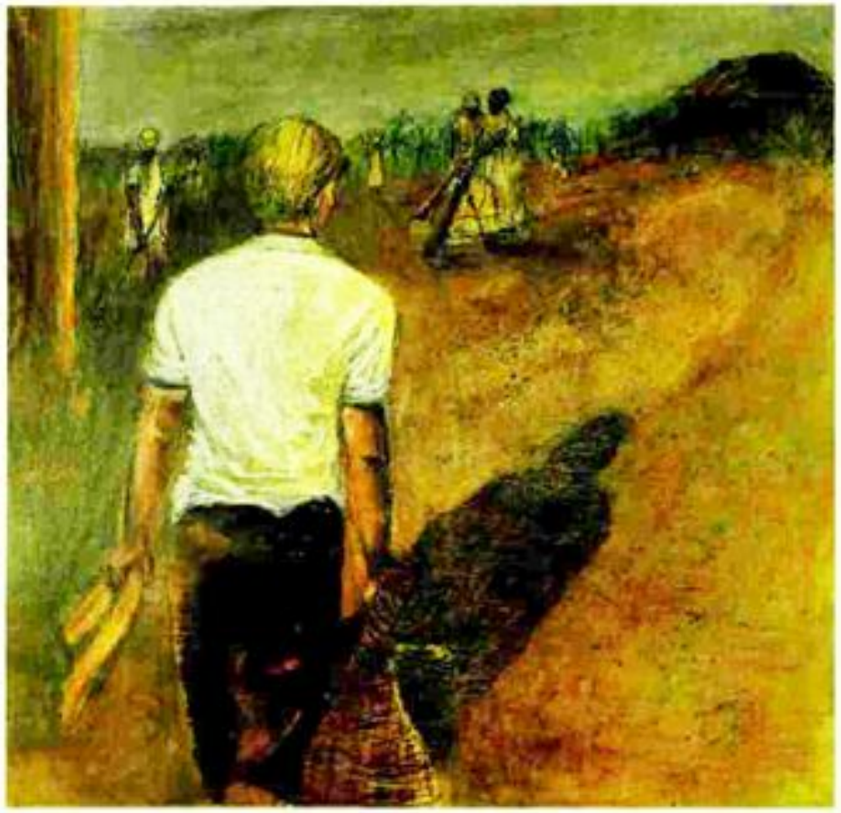

जब फ्रेडरिक सत्रह वर्ष का हुआ, तब फार्म पर एक नया आदमी आया - कोवी. कोवी गुलामों को तोड़ने का काम करता था.

उसका काम किसी भी पुरुष या महिला की आत्मा को तोड़ना था - ऐसे गुलाम जो भागने की कोशिश करते या जो मुक्त होने का सपना देखते थे.

कोवी ने देखा कि फ्रेडरिक दूसरे गुलामों की तरह नहीं था. उसे अकेले रहना पसंद था. जब बाकी गुलामों के आराम का समय होता था तो भी फ्रेडरिक घास पर कुछ पढ़ता था. कोवी ने फ्रेडरिक को जल्द ही तोड़ने का मन बनाया. नहीं तो फ्रेडरिक अन्य दासों को पढ़ना और खुद के लिए सोचना सिखा सकता था.

इसलिए कोवी ने फ्रेडरिक पर कड़ी निगाह रखी. फ्रेडरिक को तोडना फार्म के किसी अन्य गुलाम को तोड़ने की तुलना में दोगुना कठिन था. जब फ्रेडरिक दोपहर का खाना खाने के लिए बैठता, तब भी कोवी उस पर कड़ी निगाह रखता था.

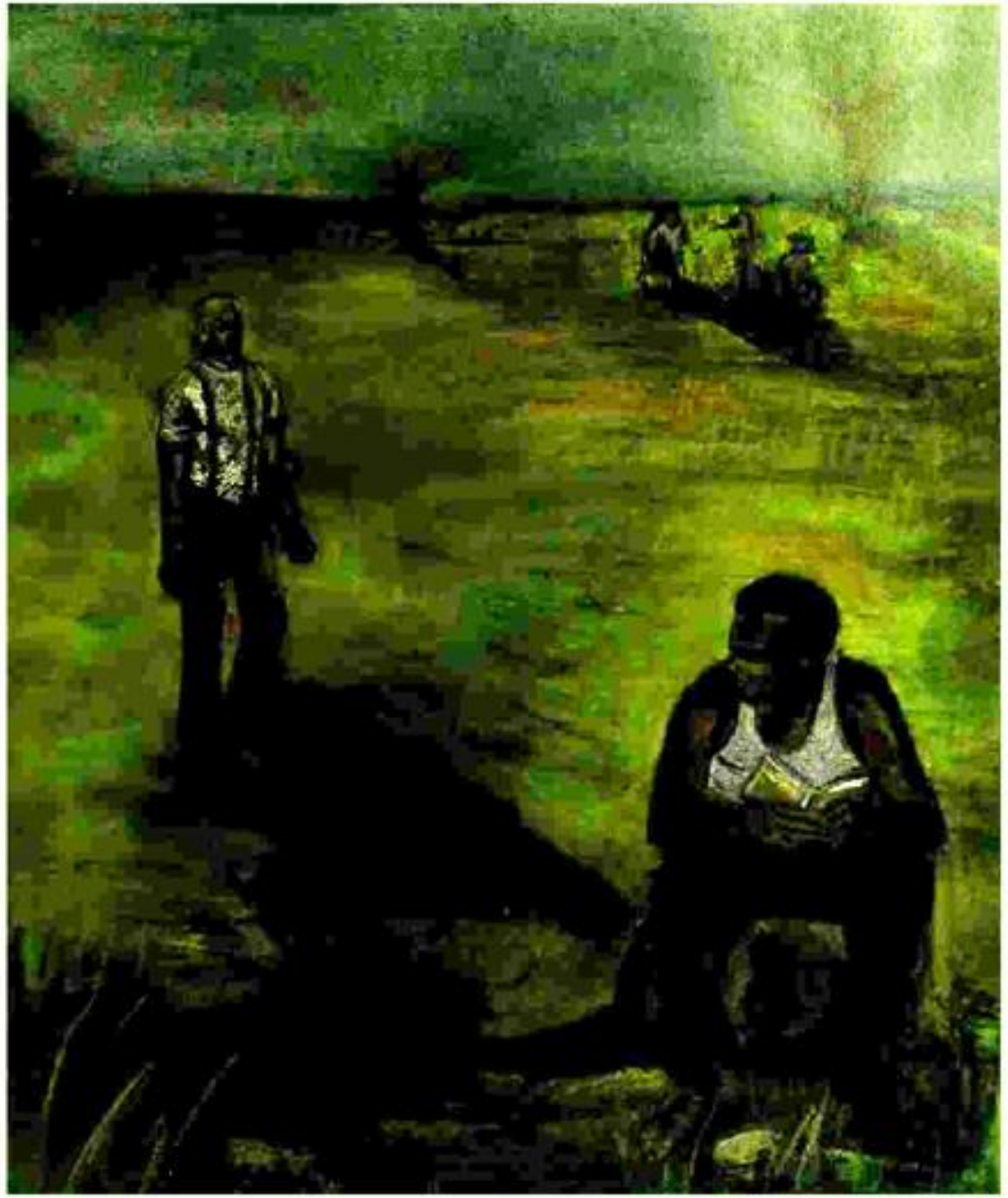

एक दिन फ्रेडरिक तम्बाखू के खलिहान में काम कर रहा था. उस दिन बहुत गर्मी थी और फ्रेडरिक जल्द ही थक गया. वो अँधेरे खलिहान से निकलकर बाहर रोशनी में आया और फिर एक बाँझ के पेड़ के नीचे गिर गया. कोवी ने फ्रेडरिक से तुरंत उठकर उसका काम ख़त्म करने को कहा.

फ्रेडरिक ने कोवी को बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन उसने एक दलील नहीं सुनी.

फिर फ्रेडरिक को अपने सिर पर एक छड़ी की तेज़ मार महसूस हुई. कोवी ने उसे तब तक पीटा जब तक फ्रेडरिक खलिहान में वापिस नहीं चला गया.

उस रात फ्रेडरिक भाग निकला. वो घने पेड़ों के बीच जाकर छिप गया और उसने जंगली बेर खाए और एक छिछली तलैया से पानी पिया.

उसे पता था कि वापिस लौटने पर उसकी जमकर पिटाई होगी और शायद उसे मार भी डाला जाए. फ्रेडरिक ने इतना डर और अकेलापन पहले कभी महसूस नहीं किया था.

अँधेरे जंगल में लेटे-लेटे फ्रेडरिक ने कल्पना की कि काश वो पैने दांतों और पंजों वाला एक जंगली जानवर होता जिससे वो अपनी रक्षा कर सकता. काश वो एक चिड़िया होता और फिर आसमान में समुद्र के ऊपर उड़कर खुद को बचा पाता.

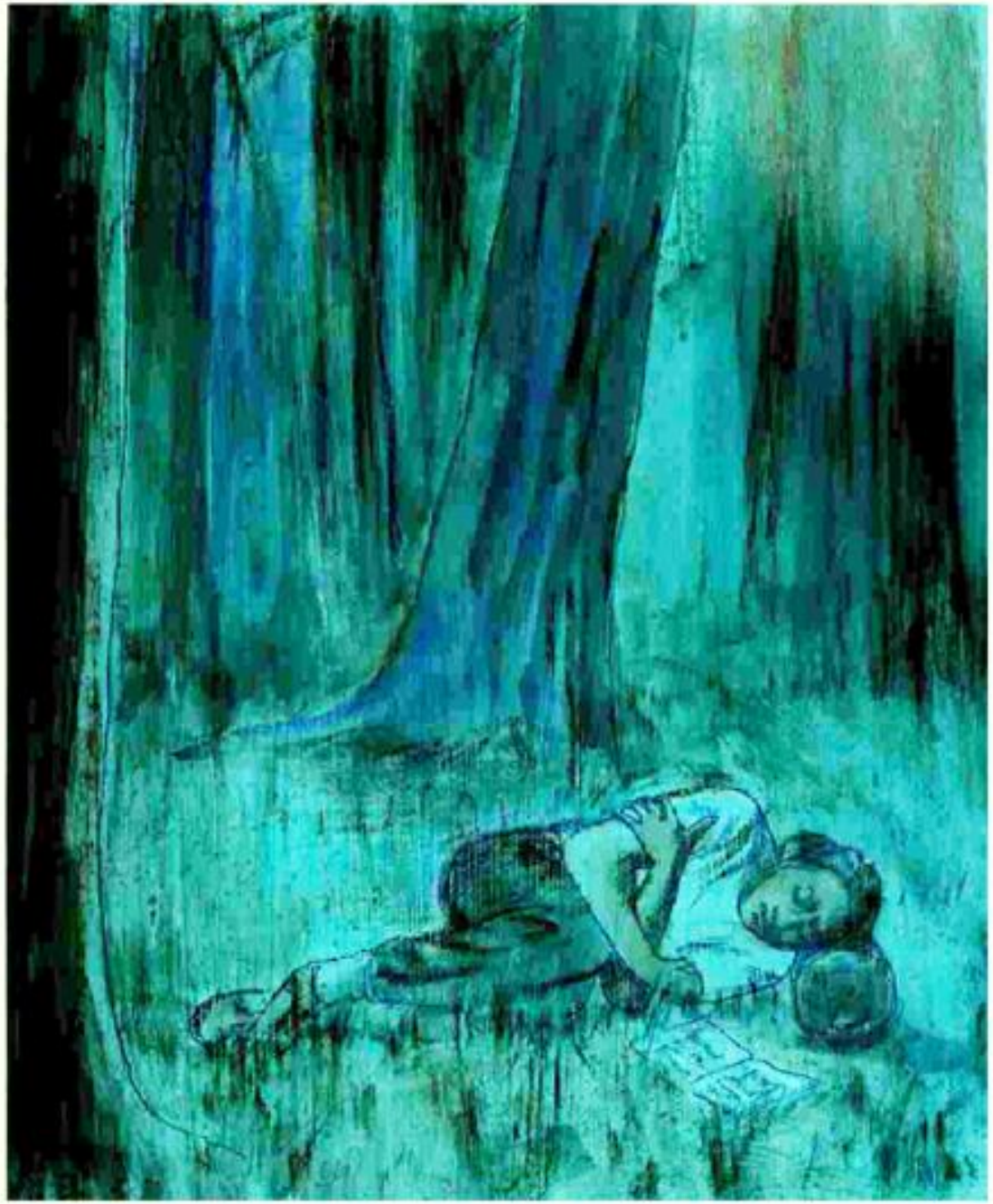

जब सूरज निकला, तो फ्रेडरिक को सुनाई दिया जैसे कोई उसकी ओर आ रहा हो. फ्रेडरिक भागने ही वाला था तभी उसने एक साथी गुलाम, सैंडी को देखा. सैंडी बहुत दयालु था. फ्रेडरिक ने सैंडी को अपनी पिटाई के बारे में बताया. फिर सैंडी उसे घर ले गया. आग के सामने बिठाकर उसने फ्रेडरिक के घावों को साफ किया, और उसे भुनी मक्का खाने को दी.

सैंडी, अफ्रीका का जादू-टोना जानता था - जो अफ्रीकी गुलाम, जहाजों द्वारा अमेरिका लाए थे. उसने फ्रेडरिक को एक जादुई जड़ दी जो उसे कोवी के कोड़ों से बचाती.

फ्रेडरिक जादू-टोने में विश्वास करना चाहता था - अगर वो उसका जीवन बचा सके.

जब फ्रेडरिक फार्म पर लौटा तो ब्रेकर कोवी ने उसे कोड़े मारने वाले "व्हीपिंग पोस्ट" पर बुलाया.

फ्रेडरिक ने कोवी की आँखों में क्रोध देखा. फ्रेडरिक जानता था कि अब कोई भी जादू-टोना उसे बचा नहीं सकता था. वो यह भी जानता था कि किसी भी आदमी को चाहें वो गुलाम हो या आजाद - उसे अपनी रक्षा खुद करनी होगी.

ब्रेकर कोवी ने अपने गांठ वाले चाबुक को उसकी छाती पर मारा.

दूसरा वार रोकने के लिए फ्रेडरिक ने अपना हाथ उठाया और फिर दोनों के बीच लड़ाई शुरू हो गई.

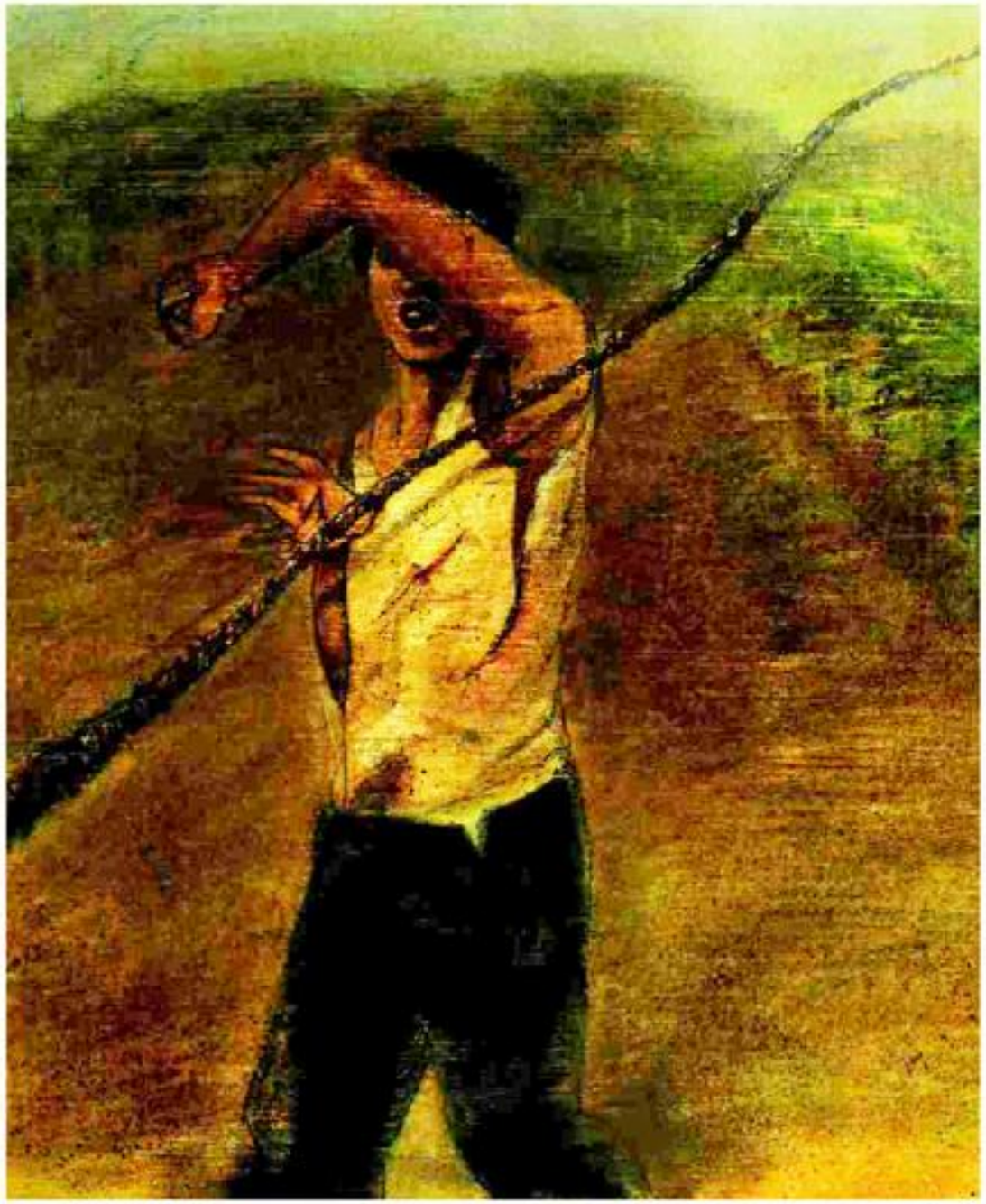

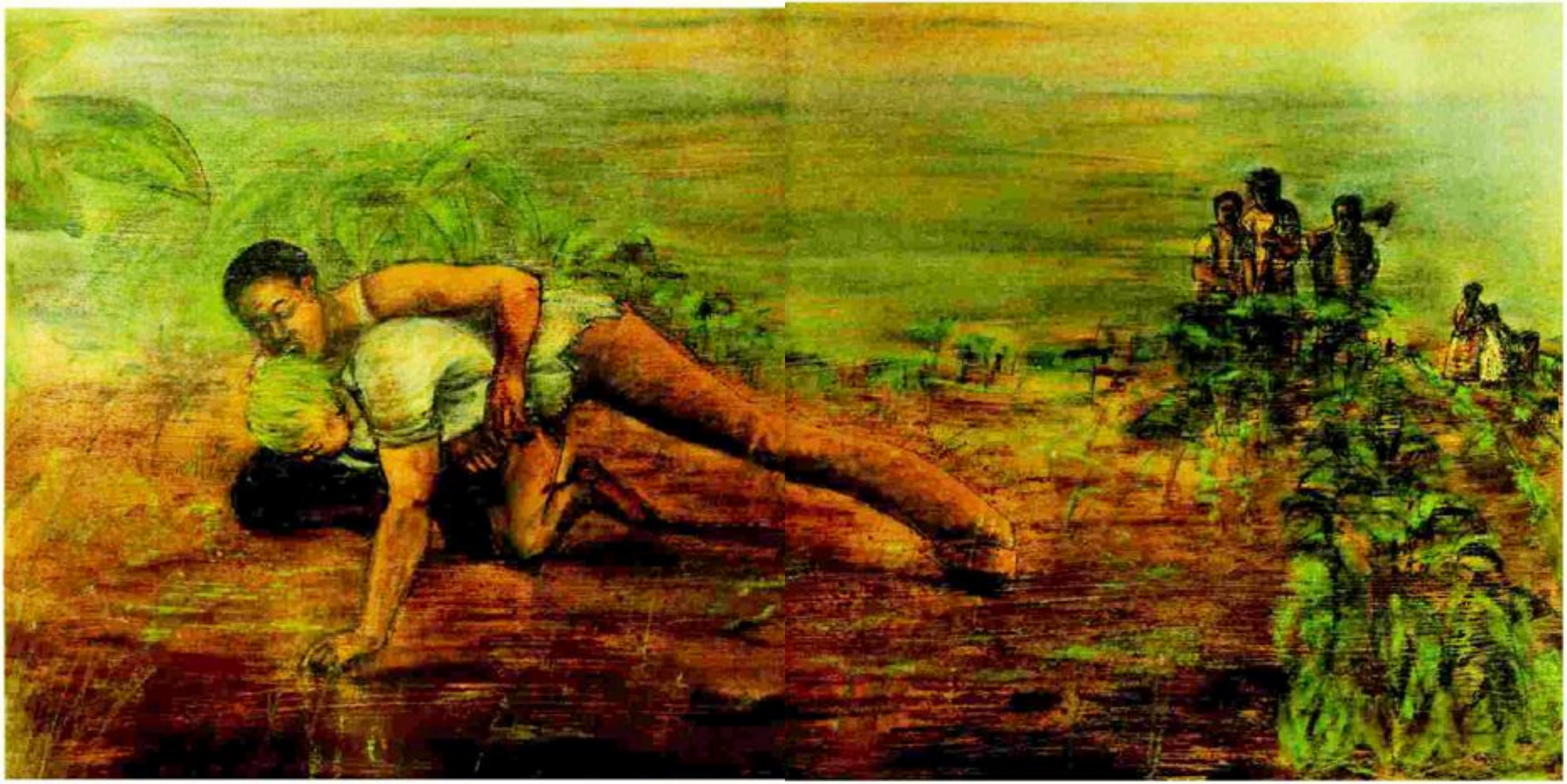

जब वे एक दूसरे से लड़ रहे थे और एक-दूसरे को लातें-घूंसे मार रहे थे और ज़मीन पर कुश्ती लड़ रहे थे, तो बाकी गुलाम उन्हें अविश्वास से देख रहे थे.

उन्होंने पहले कभी किसी गुलाम को अपना बचाव करते हुए नहीं देखा था. ऐसा साहस उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था.

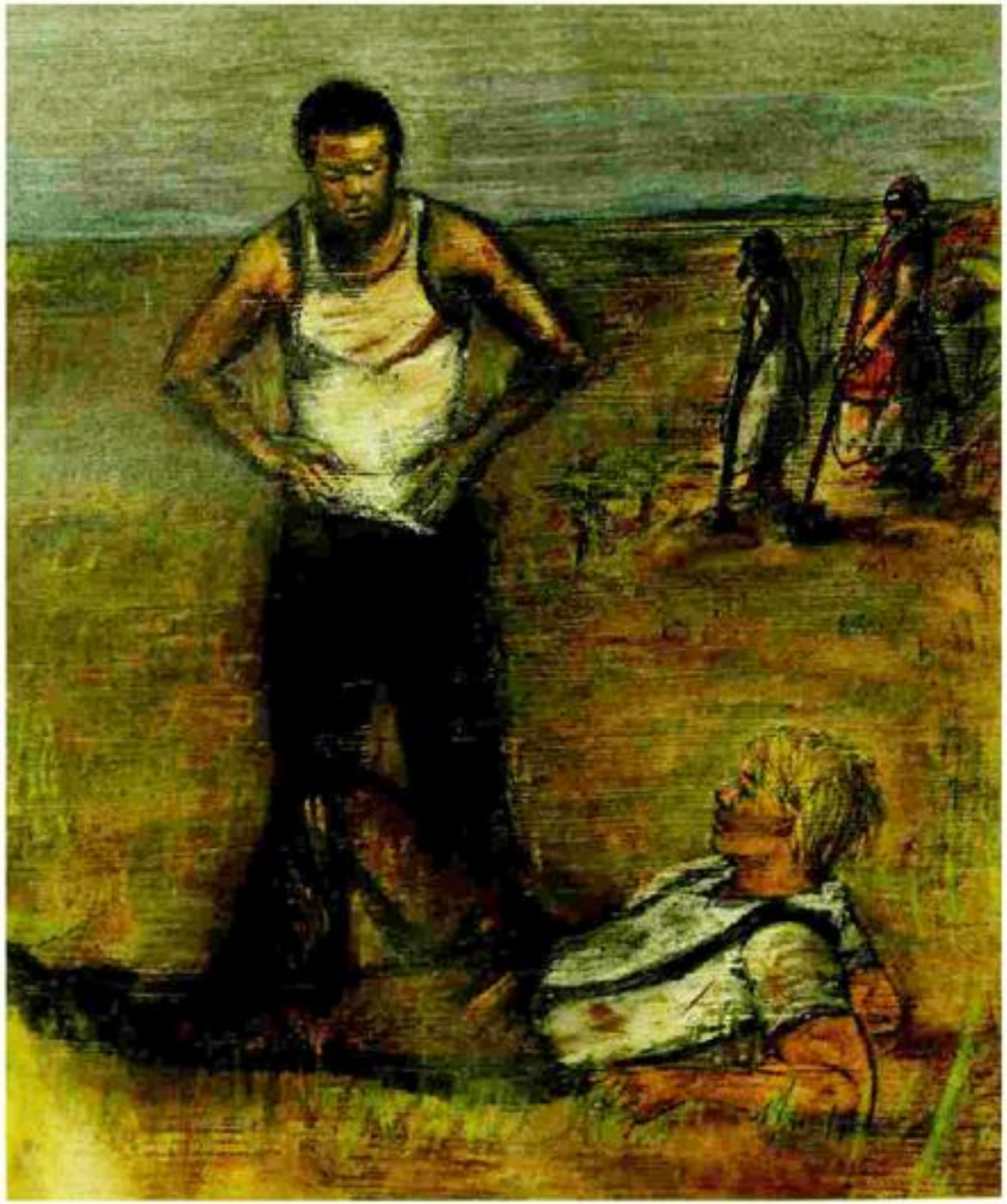

जब लड़ाई समाप्त हुई, तो ब्रेकर कोवी ने फ्रेडरिक को इज़्ज़त से देखा. अब कोवी की आंखों में डर था, लेकिन फ्रेडरिक के प्रति सम्मान भी था. फ्रेडरिक जानता था कि कोवी उस पर फिर कभी प्रहार नहीं करेगा. कोवी यह भी कभी स्वीकार नहीं करेगा कि एक गुलाम उससे लड़ा था - एक ऐसा गुलाम जिसे वह तोड़ नहीं पाया था.

उस रात, जब वह आग के पास लेटा तो फ्रेडरिक ने अपनी माँ के बारे में सोचा. उसे याद आया कि कैसे माँ पूरी रात, जमे हुए खेतों में चलती थी जिससे वो कुछ मिनटों के लिए अपने बेटे को गले लगा सके. उसने खुद से कहा कि वो फिर कभी भी गुलाम की तरह नहीं सोचेगा न ही वैसा कुछ काम करेगा. उसने अपनी माँ से वादा किया कि जिस दिन वो आज़ाद होगा उस दिन के बाद वो बाकी दासों को भी मुक्त कराएगा.

फ्रेडरिक ने आकाश की ओर देखा. बादलों के बीच चंद्रमा हल्के-हल्के बह रहा था. चाँद के बाद एक तारा निकला, पीला और दूर, लेकिन वो आकाश में जल रहा था.

लेखक का नोट

फ्रेडरिक डगलस का जन्म 1817 में एक गुलाम के रूप में हुआ था. उसके पिता कौन थे वो नहीं जानता था. उसने अपनी मां को उनकी मृत्यु से पहले सिर्फ कुछ ही बार देखा था. फ्रेडरिक के मालिक की पत्नी ने उसे पढ़ना सीखने के लिए प्रोत्साहित किया. किताबें पढ़ने और सीखने की उसकी दीवानगी इसी समय पैदा हुई और वो जीवन भर बनी रही.

1838 में, फ्रेडरिक उत्तर की ओर भाग गया. उसने गुलामी विरोधी आंदोलन में एक वक्ता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की. 1845 में, उसने अपनी जीवनी "द नैरेटिव ऑफ द लाइफ ऑफ फ्रेडरिक डगलस: एन अमेरिकन स्लेव" प्रकाशित की. किसी भी अन्य पुस्तक की अपेक्षा इस किताब ने अमेरिकी समाज को, गुलामी की क्रूरता समझने में मदद की.

फ्रेडरिक ने बाद के वर्षों में अपनी आत्मकथा के अधिक खंड लिखे और 1895 में अपनी मृत्यु तक अपने लोगों की स्वतंत्रता के लिए अपना संघर्ष जारी रखा.

समाप्त